

[καίτοι σ' ἐγὼ 'τίμησα τοῖς φρονοῦσιν εὖ.
οὐ γάρ ποτ' οὔτ' ἂν εἰ τέκνων μήτηρ ἔφυν 905
οὔτ' εἰ πόσις μου κατθανῶν ἐδήπετο,
βία πολιτῶν τόνδ' ἂν ἠρόμην πόνον.
τίνος νόμου δὲ ταῦτα πρὸς χάριν λέγω;
πόσεως μὲν ἂν μοι κατθανόντος ἄλλος ἦν,
καὶ παῖς ἀπ' ἄλλου φωτός, εἰ τοῦδ' ἠμπλακον, 910
μητρὸς δ' ἐν Ἄιδου καὶ πατρὸς κενευθότοι
οὐκ ἔστ' ἀδελφὸς ὅστις ἂν βλάβοι ποτέ.
τοιῶδε μέντοι σ' ἐκπροτιμήσασ' ἐγὼ
νόμῳ Κρέοντι ταῦτ' ἔδοξ' ἀμαρτάνειν
καὶ δεινὰ τολμᾶν, ὧ κασίγνητον κᾶρα. 915
καὶ νῦν ἄγει με διὰ χερῶν οὔτω λαβῶν
ἄλεκτρον, ἀννυμέναιον, οὔτε του γάμου
μέρος λαχοῦσαν οὔτε παιδείου τροφῆς,
ἀλλ' ὧδ' ἐρήμη πρὸς φίλων ἰ δύσμορος
ζῶσ' ἐς θανόντων ἔρχομαι κατασκαφᾶς, 920

904—920. Interpolationem primus agnovit A. Jacob. Sophocli hos versus tribuit Aristoteles Rhet. III. 16. 9. Actoris alicujus aut filii ejus Iophontis τοῦ ψυχροῦ fortasse erant. Ab Sophocle eos abjudicat post alios Dind. Utique apte post v. 903. sequeretur v. 921.

904. καίτοι σέ γ' εὖ 'τίμησα Arndt. Cf. 1031. Ph. 672.

905—913. Proscribit A. Jacob.

906. μοι mss. Qu. μου. ἐτήκετο mss. Lege ἐσήπετο. Et sic Herw. Cf. Eur. Fr. 783. φίλος δέ μοι | ἄλουτος ἐν φάραγξι σήπεται νέκυσ. El. 318. Hom. II. 19, 27. 24, 414. οὐδέ τί οἱ χρώς σήπεται οὐδέ μιν εὐλαί | ἔσθουσ'. 19, 33. Antiph. com. 161, 6. Plut. Mor. p. 665 C. νεκρούς ἀσήπτους. Transitivum σήπειν legitur Aesch. Cho. 995. Fr. 270. Herod. VI. 136. 3. III. 66. 908. δῆ mss. Dedi δέ.

909. πόσις mss. Lege πόσεως aut potius τάνδρος, cujus glossa fortasse est πόσεως. 912. βλαστοῖ (βλαστῆ K.) mss.

913. σ' ἐκπροτιμήσασ'] Mirum et inauditum compositum non aliunde cognitum. Conferri tamen potest compositum ἔξαφορᾶν O. C. 1648. ἔξαπείδομεν. Qu. σ' εὖ (aut σέ) προτιμήσασ'. Cf. ad 904.

919. ἔρημος mss. Quidni ἐρήμη, quum nulla metri necessitas sit? Cf. 739. ἐρήμης (ἐρήμον A.).

920. εἰς mss. ἐς Dind. θανόντων A. θανάτων K. L. κατασκαφᾶς A. κατασφαγᾶς K. L.